MEANING AND DEFINITION OF UNIT PLANNING

इकाई योजना—महत्त्व एवं उपयोगिता
(Unit Planning—Significance and Utility)

विज्ञान शिक्षण में इकाई योजना का महत्त्व निम्न प्रकार है—.

(1) उत्तरदायित्व पूर्ति (Fulfilment of Responsibility)—इकाई योजना में विज्ञान शिक्षण के लिए सम्पूर्ण सत्र में उपलब्ध समय को दृष्टिगत रख निर्धारित पाठ्यक्रम की विषय सामग्री को इस तरह से उचित इकाइयों में विभक्त करते हैं जिससे कि पाठ्यक्रम के शिक्षण अधिगम को उपलब्ध समय में ही उपयुक्त प्रकार से पूरा किया जा सके। इस तरह शिक्षकों को अपना उत्तरदायित्व निभाने में इकाई योजना बड़ी सीमा तक सहायक है।

(2) लाभकारी (Beneficial)—इकाई योजना में निर्मित समस्त पाठ्य इकाइयाँ स्वयं में पूर्ण तथा सार्थक होती हैं। पाठ्यक्रम सम्बन्धी समस्त प्रकार की पाठ्य वस्तु तथा अधिगम अनुभवों को इस तरह की पाठ्य इकाइयों में विभाजित कर शिक्षण प्रदान करना विद्यार्थियों के लिए शैक्षणिक तथा मनोवैज्ञानिक दोनों ही दृष्टि से लाभकारी पाया गया है।

(3) सफलता की अपेक्षाएँ अधिक (More Expectations of Success)—इकाई योजना में सर्वप्रथम इकाई शिक्षण के उद्देश्यों को भली-भाँति निश्चित किया जाता है। तदुपरान्त, उन्हें व्यवहार अन्य शब्दावली में अभिव्यक्त किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों और अध्यापक दोनों को अपने-अपने उत्तरदायित्वों एवं लक्ष्यों का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है। परिणामतः इकाई के शिक्षण एवं अधिगम में अभीष्ट सफलता की अधिक अपेक्षाएँ होती हैं।

(4) उद्देश्य प्राप्ति में सहायता (Help in the Achievement of Objectives)—इकाई योजना में विभिन्न उप-इकाइयों के शिक्षण अधिगम हेतु निम्न पर भली-भाँति विचार कर लिया जाता है—

(1) विधियाँ,

(2) तकनीक,

(3) व्यूह रचना,

(4) शिक्षण सहायक सामग्री।

परिणामतः अध्यापक को इन सभी का पूर्व ज्ञान हो जाता है। इस पूर्व ज्ञान से इनका समुचित उपयोग करना सम्भव होता है। यह शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है।

(5) मानसिक व व्यावसायिक रूप से तैयार (Mentally and Commercially Prepared)—इकाई योजना द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को उपयुक्त प्रकार से व्यवस्थित एवं संगठित करने में सहायता प्राप्त होती है। अध्यापक को यह विदित रहता है कि उसे एक इकाई तथा उसकी उप-इकाइयों में निहित विषय सामग्री के शिक्षण अधिगम हेतु कैसे कार्य तथा क्रियाकलाप करने चाहिए। यही ज्ञान उसे एक अध्यापक के नाते अपने सभी उत्तरदायित्वों के निर्वाह हेतु मानसिक तथा व्यावसायिक रूप से तैयार रखने में सहायता प्रदान करता है।

(6) प्रक्रिया को रोचक व प्रभावपूर्ण बनाना (Making the Process Interesting and Effective)—इकाई योजना में निम्न कार्य होता है—

(1) पढ़ाई जाने वाली विषय-वस्तु का उचित एवं सार्थक इकाइयों एवं उप-इकाइयों में विभाजन,

(2) उनके शिक्षण अधिगम हेतु सभी आवश्यक क्रियाओं एवं संसाधनों का पूर्व नियोजन।

इसके परिणामस्वरूप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया रोचक, प्रभावपूर्ण और सारयुक्त बन जाती है तथा कक्षा में अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न नहीं होती है।

(7) सतत् मूल्यांकन (Continuous Evaluation)—

(1) इकाई योजना में निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों के परिप्रेक्ष्य में एक उपयुक्त इकाई परीक्षण के निर्माण का प्रावधान रहता है।

(2) उपरोक्त परीक्षण इकाई के शिक्षण अधिगम परिणामों का मूल्यांकन करने में सहायक होते हैं।

उपरोक्त प्रकार से होने वाले शिक्षण अधिगम का सतत मूल्यांकन करते रहने में इकाई योजना सहायक है।

(8) कठिनाइयों का ज्ञान व उपचार (Finding out Difficulties and their Remedy)—इकाई योजना में निम्न कार्य सम्पन्न होता है—

(1) विद्यार्थियों की अधिगम कठिनाइयों, कमजोरियों तथा अक्षमताओं का निदान।

(2) उनके निवारण हेतु उपचारात्मक शिक्षण के नियोजन का प्रावधान।

इकाई योजना की सीमाएँ (Limitations of the Units Planning)

इकाई योजना के उपरोक्त लाभ व उपयोगिता के होते हुए भी इस योजना की कुछ सीमाएँ हैं। यदि इन सीमाओं को दृष्टिगत न रखा जाए तव व्यवहार में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है—

(1) नियोजन साध्य नहीं (Plan not Aim of Goal)—यह देखा गया है कि इकाई योजना की अनुपालना करते हुए शिक्षक उसका अक्षरशः अनुपालन करने का ही प्रयास करते रहते हैं। इस तरह नियोजित पथ ही स्वयं में उनकी अपनी मंजिल बन जाती है। वे विस्मृत कर देते हैं कि नियोजन अपने आप में साध्य न होकर साध्य की प्राप्ति का साधन होता है। वास्तविक उद्देश्य निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति है। उसके लिए पूर्व नियोजन की सीमाओं से परे जाना पड़ सकता है।

(2) अत्यधिक योजना केन्द्रित होना (Too Much of Plan-Centred)—इकाई योजना पूर्व नियोजित की अनुपालना पर बल देती है। यह उपयुक्त भी है, क्योंकि नियोजन होता ही क्रियान्वयन हेतु है, पर केवल इसी पर अत्यधिक बल देने से शिक्षण अधिगम विद्यार्थी केन्द्रित नहीं रह पाता वरन् योजना केन्द्रित हो जाता है। इस तरह इकाई योजना पर आधारित शिक्षण अधिगम में विद्यार्थियों की रुचियों, आवश्यकताओं, योग्यताओं तथा क्षमताओं की अनावश्यक रूप से अवहेलना होती रहती है। इस प्रकार, यह बालकों के स्वाभाविक विकास तथा उनकी रचनात्मक तथा सृजनात्मकता के पोषण में बाधक सिद्ध होती है।

(3) अत्यधिक समय तथा परिश्रम की माँग (Too Much Time and Labour Demanding)—इकाई योजना का निर्माण कार्य अत्यधिक जटिल कार्य है। इसे करने हेतु अध्यापक में काफी कठिन परिश्रम और समय की अपेक्षा की जाती है। निम्न विवरण से यह स्पष्ट है कि एक जैविक विज्ञान अध्यापक पर कार्य का भारी बोझ रहता है—

(1) उसे विद्यालय में अनेक कक्षाओं के शिक्षण का कार्य करना पड़ता है,

(2) उसे अनेक प्रकार के उत्तरदायित्वों को वहन करना पड़ता है,

(3) उसे अभ्यास कार्य, प्रोजेक्ट गृहकार्य देने और उसका निरीक्षण कर विद्यार्थियों को निर्देशन तथा उपचारात्मक शिक्षण आदि का कार्य करना होता है।